

# Navratri Vart Katha (नवरात्रि व्रत कथा)

Navratri Vart Katha (नवरात्रि व्रत कथा)

एक बार बृहस्पति देव और ब्रह्म देव में कुछ वार्तालाप हो रही तभी बृहस्पति देव ने ब्रह्म देव भी बृहस्पति देव ने ब्रह्म देव से पूछा की आप मुझे बताइये की "चैत्र और आश्विन महीनों केशुक्ल पक्ष केदौरान नवरात्रि

व्रत रखने और नवरात्रि क्यों मनाया जाता है  
ा है ? इसकेमनुष्यो को क्या लाभ होता है ा है ?" यह व्रत  
क्या है और इसे किस प्रकार से करना चाहिए  
ए ? आप कृपा करकेविस्तार से बताये  
ाये ?"

बृहस्पति देव केइस गहन प्रश्न को सुनकरन को सुनकर, ब्रह्मा देव ने उत्तर दिया  
या, "हे बृहस्पति देव आपने  
एक ऐसा प्रश्न पूछा है जो सभी जीवित प्राणियों केलिए अत्यधिक फायदेमंद है। वास्तव में  
व में,

जो लोग भक्तिपूर्वक दुर्गा  
ा, महादेव, सूर्य और नारायण का चिंतन करते हैंे हैं, वे अपनी इच्छाओं के  
लिए धन्य हैं। इस व्रत से सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। इस व्रत में सभी मनोकामनाएं पूरी में सभी मनोकामनाएं पूरी  
करने की शक्ति होती है। जो लोग पुत्र की इच्छा रखते हैं उन्हें पुत्र की प्राप्ति होती है  
ी है, जो लोग  
धन चाहते हैं उन्हें समृद्धि प्राप्त होती ही है, जो लोग ज्ञान चाहते हैं उन्हें ज्ञान प्राप्त होता है  
ा है

और जो लोग सुख की इच्छा रखते हैं उन्हें सुख मिलता है। इसकेअलावा  
ा है। इसकेअलावा, यह व्रत बीमारों की बीमारों की  
बीमारियों को ठीक करने की क्षमता रखता है। यह सभी परेशानियों को दूर करता है  
ा है, घरों में  
समृद्धि लाता है और विवाहित महिलाओं को बेटा होने  
लाओं को बेटा होने का आशीर्वाद देता है। यह व्यक्तियों को  
ियों को  
उनकेपापों से मुक्त करता है और उनकेदिल की इच्छाओं को पूरा करता है। इसकेविपरीत

जो लोग इस नवरात्रि व्रत का पालन करने में लापरवाही करते हैं  
े हैं, वे अक्सर खुद को दुःखःख, कष्ट,  
बीमारी, संतानहीनता  
ा, गरीबी और अभाव से पीड़ित पाते हैं। वे लक्ष्यहीन होकर भटकते हैं  
े हैं, भूख  
और प्यास से परेशान होते हैं और अपने उद्देश्य की भावना खो देते हैं। जहां तक गुणी ी  
महिलाएं इस व्रत का पालन नहीं करतीं  
ीं, उन्हें वैवाहिक सुख में कमी का अनुभव हो सकता है  
ा है

और कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। यदि कोई पूरे दिन व्रत रखने में असमर्थ

है, तो उन्हें एक बार भोजन करना चाहिए और दस दिनों तक अपने प्रियजनों के साथ नवरात्रि  
व्रत की कथा सुननी चाहिए।

ए।"

"हे बृहस्पति देव ! मुझे उस व्यक्ति की कहानी सुनाने की अनुमति दें जिसने अतीत में इस  
में इस

महान व्रत का पालन किया था। कहानी ध्यान से सुने। इस प्रकार

ा। कहानी ध्यान से सुने। इस प्रकार, ब्रह्मा देव केशवर्द्धों को

सुनने के बाद, बृहस्पति देव ने उत्तर दिया

या, 'हे ब्रह्मा देव, आप तो शुभचिंतक हैं मानवता के

ा के

कृपया इस व्रत के इतिहास को स्पष्ट करें। मैं ध्यान से सुन रहा हूँ और आपका मार्गदर्शन

न

और आशीर्वाद चाहता हूँ।

ा हूँ।'

ब्रह्मा देव ने फिर कथा का वर्णन करना शुरू किया

या, 'प्राचीन काल में, मनोहर नगर शहर में

पीठत नाम का एक अनाथ ब्राह्मण रहता था। वह भगवती दुर्गा के समर्पित उपासक थे। उनसे

े। उनसे

असाधारण सुन्दरता और गुणों वाली सुमति नामक कन्या का जन्म हुआ। हर दिन

न, जब उसके

पिता दुर्गा की पूजा करते थे और घरेलू अनुष्ठान करते थे, सुमति ईमानदारी से उसमें शामिल

ल

होती थी। हालाँकि

, एक दिन

न, जब वह अपनी सहेलियों के साथ खेल में तल्लीन थी

ी, तो वह ो वह

भगवती की पूजा से चूक गई। उसके पिता ने अपनी बेटी की लापरवाही से परेशान होकर उसे

ा ने अपनी बेटी की लापरवाही से परेशान होकर उसे

डांटते हुए कहा, 'हे दुष्ट बेटी! आज तुमने भगवती की पूजा की उपेक्षा की

ी की पूजा की उपेक्षा की, इसके लिए मैं तुम्हारा

ुम्हारा

विवाह किसी कोढ़ी या दरिद्र मनुष्य से कर दूँगा। ँगा।'

अपने पिता के वचन सुनकर सुमति दुःख से भर गई और बोली

ुःख से भर गई और बोली, 'हे पिता! मैं आपकी बेटी हूँ

ा! मैं आपकी बेटी हूँ

और पूरी तरह आपकी इच्छा के प्रति समर्पित हूँ। आप मेरा विवाह किसी राजा

सी राजा, पहलवान, रंक,

कोढ़ी या दरिद्र व्यक्ति से कर सकते हैं जिसे आप उचित समझें। फिर भी

र भी, जो कुछ भी मेरे

लिए नियति है वह घटित होगा। मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसी के कार्यो के अनुरूप परिणाम ाम

मिलते हैं, क्योंकि जब मनुष्य कर्म करते हैं

े हैं, तो परिणाम परमात्मा द्वारा नियंत्रित होते हैं।

े हैं।'

अपनी बेटी सुमति केऐसा कहने पर, ब्राम्हण क्रोधित हो गया और गुस्से में उसने शीघ्रता से

ा से

अपनी पुत्री का विवाह एक कोढ़ी से कर दिया। और ब्राम्हण ने चिल्लाते हुए कहा की जाओ

े हुए कहा की जाओ

अपने कर्मों का फल भोगो और भाग्य पर अपनी निर्भरता का परिणाम देखो।" अपने पिता के

ा के

ऐसे कठोर शब्दों का सामना करते हुएे हुए, सुमति ने चुपचाप सोचा, "ओह, ऐसा पति होना कितना

ना

दुर्भाग्य है। "अपने उदास विचारों में डूबी सुमति अपने पति केसाथ जंगल में चली गई जंगल में चली गई, जहाँ ैं

उन्होंने घने घास केभयानक, उजाड़ जंगल में कठिनाइयों से भरी एक रात बिताई।

ाई।

अभागी लड़की की दुर्दशा देखकर

शा देखकर, देवी भगवती, सुमति केपिछले गुणों से प्रभावित होकर

होकर, उसके

सामने प्रकट हुई और बोलीं, "हे निराश्रित ब्राह्मण महिला! मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूं। तुम

ुम

अपनी इच्छानुसार कोई भी वरदान मांग सकती हो।" देवी दुर्गा केये शब्द सुनकर ब्राह्मणी ने

ी ने

पूछा, "कृपया मुझे अपनी पहचान बताएं।" देवी ने उत्तर दिया

या, "मैं आदि शक्ति भगवती

ी,

ब्रह्मविद्या और सरस्वती का अवतार हूं। जब मैं संतुष्ट होती हूं

ी हूं, तो मैं संवेदनशील प्राणियों की ो मैं संवेदनशील प्राणियों की

पीड़ा को कम करती हूं और उन्हें खुशी प्रदान करती हूं। "हे निराश्रित ब्राह्मण महिला!ला! मैं तुम्हारे ुम्हारे  
पिछले जन्म केपुण्य कार्यों केकारण तुम्हारे पास आयी हूँ। इस पर सुमति ने कहा हे देवी ैं इस पर सुमति ने कहा हे देवी

भगवती आप "मुझे मेरे पिछले जन्म केबारे में बताओ

ाओ, तो देवी भगवती ने कहा ध्यान से ी ने कहा ध्यान से

सुनो। अपने पूर्व जीवन में जीवन में, तुम एक निषाद (भील) की पत्नी थी और तुम्हारा अपने पति केुम्हारा अपने पति के  
प्रति अटूट निष्ठा थी। एक दुर्भाग्यपूर्ण दिन

न, तुम्हारे पति ने चोरी कीुम्हारे पति ने चोरी की, जिसकेकारण आप दोनों

आप दोनों

को सैनिकों द्वारा पकड़ लिया गया और कैद कर लिया गया। कैद में रहने केदौरान

या गया। कैद में रहने केदौरान, आपको

भोजन और पानी से वंचित रखा गया

रखा गया, यहां तक कि नवरात्रि केदिनों में भी। इस तरह

रह, भोजन

और पानी दोनों से परहेज करते हुए नौ दिन का उपवास रखा। उन दिनों तुमने जो व्रत किया

या

था, उसकेप्रभाव से प्रभावित होकर

होकर, मैं अब तुम्हें वरदान देने आयी हूँ। जो भी तुम्हारा दिल

ल  
चाहे, मांग लो।"

देवी भगवती केशब्दों को सुनकरी केशब्दों को सुनकर, सुमति ने हाथ जोड़कर विनती की  
ी की, "देवी भगवती, यदि आप आप  
वास्तव में मुझसे प्रसन्न हैं मैं मुझसे प्रसन्न हूँ, तो मैं विनम्रतापूर्वक आपके सामने झुकती हूँ और आपसे मेरे पति  
मेरे पति  
केकुष्ठ रोग को ठीक करने की प्रार्थना करती हूँ।" जवाब में  
ी हूँ।" जवाब में, देवी भगवती ने विनम्रतापूर्वक

क

उत्तर दिया

या, "उन दिनों के दौरान तुमने जो व्रत किया था उससे प्राप्त एक दिन का पुण्य अपने  
न का पुण्य अपने  
पति केकुष्ठ रोग को कम करने के लिए अर्पित करें। उस पुण्य की शक्ति से  
ि से, आपके पति को  
उनके दुःख से मुक्ति मिल जाएगी।"  
ल जाएगी।"

ब्रह्मा देव ने आगे कहा, "सुमति, देवी भगवती केशब्दों को सुनकर प्रसन्न हो गई और उसका ी केशब्दों को सुनकर प्रसन्न हो गई  
और उसका

मन पति को ठीक करने की इच्छा से भर गया, उसने भक्तिपूर्वक  
क 'तथास्तु' कहा। उस उच्चारण

के साथ, उसके पति का शरीर कुष्ठ रोग से मुक्त हो गया और स्वास्थ्य चमक उठा। अपने  
्य चमक उठा। अपने

ब्राह्मण पति के रूपांतरित और सुंदर रूप को देखकर

और सुंदर रूप को देखकर, वह देवी की स्तुति करने लगी और कहने ुति करने लगी और कहने  
लगी, 'हे देवी भगवती! आप दुखों को दूर करने वाली हैं। तीनों लोकों के संकटों को दूर करने  
ीनों लोकों के संकटों को दूर करने

वाली, सभी दुखों को दूर करने वाली, दुर्बलों को ठीक करने वाली, प्रसन्न होने पर मनचाहा वरदान  
देने वाली और दुष्टों का विनाश करने वाली दिव्य मां। हे अंबा! मेरे पिता ने मुझे त्याग दिया

या

और मेरी शादी कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्ति से कर दिया। अपने ही पिता द्वारा तिरस्कृत और  
और

त्याग दी गयी हूँ मैं और इस उजाड़ जंगल में भटकता रहा। व

ा रहा। वह आप ही हैं, हे देवी, आपने मुझे

इस विपत्ति से बचाया है

से बचाया है, मैं आपको प्रणाम करती हूँ.

ी हूँ.

सुमति के बातें सुनकर सुनकर, "देवी भगवती! बहुत प्रसन्न हुई और भविष्यवाणी की  
ी की, 'हे सुमति! उचित

समय पर, आप उदालय नामक एक पुत्र को जन्म देंगे, जो असाधारण रूप से बुद्धिमान  
रूप से बुद्धिमान, धनवान नवान,

और साहसी होगा।' इस दिव्य आशीर्वाद केबाद  
ाद केबाद, देवी भगवती ने एक बार फिर सुमति को  
र सुमति को

संबोधित करते हुए कहा  
े हुए कहा, 'हे सुमति ! जो भी इच्छा हो मांग लो।' देवी भगवती केये वचन ी केये वचन  
सुनकर सुमति ने नम्रतापूर्वक अनुरोध किया  
या, 'हे देवी भगवती ! यदि आपकी मुझ पर कृपा है  
आपकी मुझ पर कृपा है,  
तो कृपया मुझे नवरात्रि व्रत की विधि और उसकेफल केबारे में विस्तृत विवरण प्रदान करें।  
प्रदान करें।"

सुमति के अनुरोध करने पर करने पर, देवी भगवती ने कही ने कहा, "हे सुमति ! मैं नवरात्रि उपवास की प्रक्रिया  
या

को समझाऊंगी, एक पवित्र अनुष्ठान जो मनुष्य द्वारा किये गए सभी पापों को नष्ट कर देता  
ा

है और मोक्ष की ओर ले जाता है। आश्विन माह केशुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से शुरू करके

न माह केशुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से शुरू करके

लगातार नौ दिनों तक मेरे बताये विधि के अनुसार उपवास करो।"

धि के अनुसार उपवास करो।" यदि पूरे दिन उपवास नहीं न उपवास नहीं

कर सकते, तो एक समय का भोजन करें। विद्वान ब्राह्मणों से मार्गदर्शन लेकर एक पवित्र घट त्र घट

का निर्माण करे और एक बगीचा स्थापित करें

करें, जिसमें हर दिन श्रद्धपूर्वक पानी दिया जाए।"या जाए।"

उन्होंने आगे कहा, "नियमित व्रत और पूजा करके देवी महाकाली और पूजा करके देवी महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती ी

की मूर्तियों का निर्माण करो और फूल व प्रसाद अर्पित करो। विशेष फलों को अर्घ्य देने से देने से

विशेषशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है: बिजौरा रूप प्रदान करता है

ा है, जायफल प्रसिद्धि प्रदान करता है

ा है,

अंगूर सफलता प्रदान करता है, आंवला खुशी प्रदान करता है और केला आभूषण प्रदान करता

ा

है। नौवें दिन व्रत के समापन पर फूल और फलों से अर्घ्य देने केबाद विधिपूर्वक हवन करें।

क हवन करें।"

देवी भगवति ने आगे कहा की, "चीनी, घी, गेहूं, शहद, जौ, तिल, बिल्व केपत्तेल्व केपत्ते, नारियललल, अंगूर और

कदम्ब केफूल जैसी सामग्रियों का उपयोग करके हवन करें। हवन में गेहूं को अर्पित करने से

करने से

लक्ष्मी की प्राप्ति, खीर और चंपा केफूल से धन की प्राप्ति और बेल केपत्ते खुशी लाते हैं।

े हैं।

आंवला प्रसिद्धि लाता है

ा है, केले संतान लाते हैं

े हैं, कमल केफूल शाही सम्मान लाते हैं।" े हैं।"

"हवन में चीनी, घी, नारियललल, शहद, जौ, तिल और फल चढ़ाने वाले व्यक्ति को अपने मनोवांछित

फल प्राप्त होता है। इस व्रत को करने वाले व्यक्ति को इस प्रक्रिया का सावधानीपूर्वक पालन

क पालन

करना चाहिए, कार्यवाहक पुजारी को दक्षिणा देनी चाहिए और यज्ञ केसफल समापन के लिए  
ए  
धन्यवाद करना चाहिए।"ए।" "जो कोई भी बताए गए अनुसार इस नवरात्रि व्रत का पालन करता  
ा  
है, उसकी सभी इच्छाएं बिना किसी संदेह के पूरी होंगी। इन नौ दिनों के दौरान किए गए किसी  
सी  
भी दान कार्य का कई गुना फल मिलेगा। इस नवरात्रि व्रत का पालन करने से  
का पालन करने से, आप उन लोगों  
के बराबर पुण्य प्राप्त करेंगे  
करेंगे, जितना एक अश्वमेध यज्ञ करने से होता है। हैं, हे सुमति इस महान  
व्रत का पालन करें का पालन करें, यह सभी इच्छाओं को पूरा करता है। है, चाहे आप किसी पवित्र तीर्थ स्थल पर  
ल पर  
हों, किसी मंदिर में हों में हों, या अपने घर की सीमा के भीतर हों। र हों।  
इतना कहकर ब्रह्म देव ने कहाना कहकर ब्रह्म देव ने कहा, "हे बृहस्पति देव ! इस प्रकार सुमति को इस व्रत की विधि  
धि  
और फल बताकर देवी भगवती वह से गायब हो गई। इस व्रत को जो कोई भी  
को जो कोई भी, चाहे वह पुरुष  
हो या महिलाला, अटूट भक्ति के साथ करता है  
ा है, उसे न केवल सुख की प्राप्ति होती है। अपितु उसे  
ु उसे  
इस संसार में मोक्ष का दुर्लभतम रूप प्राप्त होता है। हे बृहस्पति देव  
ा है। हे बृहस्पति देव, यह नवरात्रि व्रत की  
की  
असाधारण महिमा है जिसे मैंने आपके सामने प्रस्तुत किया है।  
या है।  
यह सुनकर बृहस्पति देव अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने ब्रह्मा देव को संबोधित करते हुए  
े हुए  
कहा, "हे ब्रह्म देव! आपने इस नवरात्रि व्रत का महत्व बताकर मुझ पर बहुत बड़ी कृपा की है।"  
ी कृपा की है।"  
इस पर आगे बढ़ते हुए ब्रह्म देव ने कहा  
े हुए ब्रह्म देव ने कहा, "हे बृहस्पति देव ! देवी भगवती सम्पूर्ण सृष्टि को  
को  
पालने वाली है वह दुष्टों को दण्ड देती है और भक्तों को मनवांछित फल प्रदान करती है  
ी हैं, और  
वास्तव में इस महादेवी को कौन समझ सकता है  
ा है? आइए हम देवी भगवती को श्रद्धापूर्वक  
क  
प्रणाम करें।"  
ाम करें।"